# हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन को लेकर क्यों मचा है इतना हंगामा

मलेरिया के इलाज में काम आने वाली हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन इन दिनों बहुत ही चर्चा में है। कारण यह कि इस दवा को कोरोना के भी इलाज में कारगर माना जाने लगा है। हालांकि अभी तक इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि यह दवा कोरोना वायरस का संक्रमण रोक सकती है या इस बीमारी का इलाज हो सकता है। लेकिन महामारी से बढ़ते मौत के तांडव ने पूरी दुनिया को इस स्थिति में ला दिया है कि जहां कहीं भी थोड़ी-सी आशा की किरण दिखती है, हम उसकी संभावना तलाशने में लग जाते हैं। इस बेचैनी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों की सलाह से इतर जाकर भी भारत से हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन की न सिर्फ मांग की, बल्कि आपूर्ति नहीं होने पर प्रतिशोधी प्रतिक्रिया की चेतावनी तक दे डाली। हालांकि भारत ने भी इस दवा के निर्यात पर पहले प्रतिबंध लगाया और फिर बाद में मानवीय आधार पर उसमें कुछ ढील देने का एलान किया है। अब इन सवालों के जरिए जानते हैं, क्या है मामला।

### क्या है हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन?

हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन दशकों से मलेरिया के इलाज की एक निर्धारित दवा है। इसका इस्तेमाल रूमटॉइड आर्थ्राइटिस तथा ल्यूपस (त्वचा पर निकलने वाला एक क्रॉनिक तथा उभरा हुआ घाव) जैसे ऑटोइम्यून रोगों के इलाज के लिए भी होता है।

### क्यों माना जाने लगा कोरोना का संभावित इलाज?

एक प्रयोगशाला अध्ययन में पाया गया कि क्लोरोक्विन कोरोना वायरस को कोशिकाओं पर हमले से रोकता है। हालांकि टेस्ट ट्यूब या पेट्री डिसेस में जो दवा वायरस पर काबू पाते हैं, वैसा मानव शरीर में हमेशा नहीं होता है। साथ ही यह पाया गया है कि हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन इंफ्लूएंजा तथा अन्य वायरल रोगों को रोकने या उनके इलाज में सफल नहीं है। लेकिन चीन और फ्रांस के डॉक्टरों की रिपोर्ट के अनुसार, हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन कभी-कभी एंटीबॉयोटिक एजिथ्रोमाइसिन के साथ दिए जाने से रोगियों को राहत मिलती दिखती है। परंतु यह अध्ययन छोटे पैमाने पर हुआ। इसलिए व्यापक पैमाने पर यह पता नहीं चल पाया कि दवा ने काम किया या नहीं। फ्रांसीसी अध्ययन को इस आधार पर नकार दिया गया कि यह मानकों को पूरा करने वाला नहीं था।

**और भी अध्ययन की जरूरत:** दूसरी ओर, चीन के एक हालिया अध्ययन (जिसमें कंट्रोल ग्रुप को शामिल किया गया) से यह बात बताई गई कि कोरोना के हल्के मामले में रोगियों के इलाज में हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन से मदद मिल सकती है। लेकिन यह अध्ययन भी सीमित पैमाने पर हुआ, जिसमें कुल 62 रोगी ही थे और उन्हें अन्य दवाएं भी दी गईं। शोधकर्ता खुद भी कहते हैं कि इस संबंध में और भी अध्ययन की जरूरत है। कोरोना रोगियों में इम्यून सिस्टम काफी सक्रिय हो जाता है, जिससे सूजन/जलन पैदा होने के साथ ही फेफड़ा और अन्य अंगों को नुकसान पहुंचने का खतरा होता है। जबकि हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन को अति सक्रिय इम्यून सिस्टम पर काबू पाने वाला माना जाता है। डॉक्टर उम्मीद करते हैं कि हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन इस स्थिति को शांत करता है। लेकिन क्या यह वाकई काम करता है, इसका कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है।

### क्या हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन संक्रमण से बचा सकता है?

इस बात का कोई सबूत नहीं है कि हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन कोरोना वायरस के संक्रमण से बचा सकता है। हालांकि यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा के शोधकर्ता कोरोना के रोगियों के साथ रहने वाले लोगों पर इस दवा का असर परखने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या यह उन्हें संक्रमण से बचा सकता है।

### क्या एफडीए से यह दवा स्वीकृत है?

जहां तक अमेरिका का संबंध है, फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) ने मलेरिया, रूमटॉइड आर्थ्राइटिस तथा ल्यूपस के इलाज के लिए इस दवा को मंजूरी दी है न कि कोविड-19 के लिए। लेकिन डॉक्टरों को इस बात की अनुमति है कि वे यदि सोचते हैं कि किसी स्थिति में यह मददगार हो सकता है तो इस दवा की सलाह दे सकते हैं। इसे ऑफ लेवल इस्तेमाल कहते हैं। मार्च के उत्तरार्द्ध में एफडीए ने अस्पतालों को हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन का ऐसे रोगियों के इलाज के लिए आपात अनुमति दी, जो क्लीनिकल ट्रायल के योग्य नहीं हैं। लेकिन इसके बारे में रोगी तथा परिवार को सूचना देनी होगी तथा रोगियों के स्वास्थ्य पर नजर भी रखनी होगी। लेकिन आपात अनुमति संघीय आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है।

### क्या कोरोना रोगियों को दी जा रहा है हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन?

कोरोना का अभी तक कोई सिद्ध उपचार नहीं होने से कई अस्पताल इस उम्मीद में रोगियों को यह दवा देने लगे हैं कि इससे मदद मिल सकती है। दुनिया भर में नियंत्रित समूह पर इस दवा का क्लीनिकल ट्रायल शुरू हो चुका है। अमेरिका में 2 अप्रैल को राष्ट्रीय स्तर पर इसका ट्रायल शुरू हुआ, जिसके लिए 44 मेडिकल सेंटरों पर 510 रोगियों का नाम दर्ज किया गया है। अध्ययन से पता चलेगा कि यह दवा कोरोना वायरस के खिलाफ काम करती है या नहीं। यदि इसे असरकारी नहीं पाया गया तो संसाधनों का इस्तेमाल अन्य संभावित इलाज खोजने में किया जाएगा।

### क्या हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन लेने से कोई खतरा है?

सभी दवाओं की तरह इसके भी दुष्प्रभाव हो सकते हैं। यह दिल, रेटिना संबंधी आंख की समस्या, लिवर और किडनी के रोगों से ग्रस्त लोगों के लिए सुरक्षित नहीं है। इसके अलावा जी मिचलाना, डायरिया, मनोदशा में बदलाव तथा त्वचा पर चकते जैसे दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं। हृदय रोग विशेषज्ञों ने आगाह किया है कि हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन तथा एजिथ्रोमाइसिन दिल के काम में खतरनाक व्यवधान पैदा कर सकती हैं। कुल मिलाकर माना जाता है कि जिन लोगों में ऐसी बीमारियां नहीं हैं, उनके लिए अपेक्षाकृत यह सुरक्षित है। लेकिन यह पता नहीं है कि क्या कोविड-19 के गंभीर बीमारों के लिए हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन सुरक्षित है या नहीं।

### क्या कोरोना संक्रमण रोकने को हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन ले सकते हैं?

बगैर डॉक्टर से पूछे बिल्कुल भी नहीं। ऐसे डॉक्टर से संपर्क करें, जो आपकी मेडिकल हिस्ट्री जानते हों और उन्हें यह भी पता हो कि आप अभी कौन-सी दवा ले रहे हैं। ऐसे में अपने मन से यह दवा लेना नुकसानदेह हो सकता है।

(स्रोत : न्यूयार्क टाइम्स)

## कोरोना एक नजर

### घरेलू हिंसा की रिपोर्ट के लिए वाट्सएप नंबर जारी

**नई दिल्ली :** राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) ने लॉकडाउन के दौरान घरेलू हिंसा की घटनाओं के मामले की रिपोर्ट देने के लिए वाट्सएप नंबर जारी किया है। आयोग ने कहा है कि वाट्सएप नंबर 7217735372 पहले से ही संचालन में मौजूद ऑनलाइन शिकायत लिंक और ईमेल के अतिरिक्त है। यह आपात नंबर घरेलू हिंसा का सामना कर रही महिलाओं के लिए है। (प्रेट्र)

### बेसहारा विक्षिप्तों की व्यवस्था पर केंद्र से जानकारी मांगी

**नई दिल्ली:** राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने केंद्र सरकार से दो सप्ताह में देश भर में सड़कों पर बेसहारा घूम रहे विक्षिप्तों के लिए की गई व्यवस्था के बारे में सूचित करने को कहा है। एक बयान में आयोग ने कहा है कि उसने मानसिक रूप से बीमार लोगों के मानवाधिकार के उल्लंघन पर शिकायत को संज्ञान में लिया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय को दो सप्ताह में जवाब सौंपने के लिए कहा है। (प्रेट्र)

### स्पाइसजेट ने हो ची मिन्ह के लिए पहली मालवाहक सेवा दी

**मुंबई :** बजट कैरियर स्पाइसजेट ने शुक्रवार को वियतनाम के हो ची मिन्ह के लिए पहली बार मालवाहक सेवा के रूप में उड़ान भरी। कोरोना वायरस महामारी के दौरान हैदराबाद से विमान करीब 16 टन मेडिकल आपूर्ति लेकर रवाना हुआ। इसके अलावा इसका एक मालवाहक महत्वपूर्ण मेडिकल उपकरणों को लेकर बेंगलुरु से सिंगापुर रवाना हुआ। (प्रेट्र)

### नौ अप्रैल तक 180 विमानों ने 258.28 टन सामान ढोया

**नई दिल्ली :** 21 दिनों का लॉकडाउन शुरू होने के दिन से लाइफलाइन उड़ान योजना के तहत कुल 180 विमानों ने गुरुवार तक 258.24 टन सामान परिवहन किया। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। मंत्रालय ने 14 अप्रैल तक जारी लॉकडाउन के दौरान हवाई मार्ग से आवश्यक सामान पहुंचाने के लिए लाइफलाइन उड़ानें शुरू की थीं। (प्रेट्र)

### कर्मचारी की मौत पर 50 लाख देगी राजस्थान सरकार

**जयपुर:** राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदेश के सरकारी कर्मचारियों को ड्यूटी के दौरान मौत होने पर आश्रितों को 50 लाख रुपये की सहायता देने की घोषणा की है। सरकारी कर्मचारियों के ड्यूटी पर रहते हुए कोरोना वायरस संक्रमण के कारण मौत होने पर इसका लाभ मिलेगा। सीएम ने स्वास्थ्यकर्मियों का 50 लाख रुपये का बीमा कराने की भी घोषणा की है । (जासं)

# 13 देशों को दी जाएगी हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन

**तैयारी** ▶ जरूरत से तीन गुना रखकर बाकी का निर्यात करेगा भारत

### निजी कंपनियों को नहीं सिर्फ विदेशी सरकारों को दी जाएगी दवा

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली**

कोविड-19 में कारगर समझी जाने वाली हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन (एचसीक्यू) दवा की वैश्विक मांग लगातार बढ़ती जा रही है, लेकिन फिलहाल भारत ने 13 देशों को इसकी आपूर्ति करने का फैसला किया है। इनमें अमेरिका, स्पेन और जर्मनी जैसे देश शामिल हैं जिन्होंने पहले से ही भारतीय कंपनियों के साथ इस दवा के लिए अनुबंध कर रखे थे। दूसरे देशों में अफगानिस्तान, भूटान, नेपाल, बांग्लादेश व मालदीव भी शामिल हैं जिन्हें प्राथमिकता के तौर पर उक्त दवा के अलावा पैरासीटामोल (पीसीएम) भी दी जाएगी। हिंद महासागर में स्थित दो अन्य छोटे देशों सेशल्स व मॉरीशस के अलावा ब्राजील, डोमिनिक रिपब्लिक व बहरीन को भी एचसीक्यू की आपूर्ति की जा रही है।

भारत इन दवाओं की आपूर्ति का फैसला दो तथ्यों के आधार पर ले रहा है। पहला यह कि घरेलू जरूरत पूरी होने के बाद ही यह दूसरे देशों को दी जाएगी। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के मुताबिक भारत अभी एचसीक्यू की 20 करोड़ टैबलेट तैयार कर सकता है। लेकिन जरूरत अभी एक करोड़ की है जबकि 3.28 करोड़ टैबलेट तैयार हैं। मोटे तौर पर अभी योजना यह है कि जरूरत से तीन गुना ज्यादा टैबलेट अपने पास रखकर दूसरे देशों को मानवता के आधार पर इसकी आपूर्ति की जाए।

दूसरा तथ्य यह है कि भारत इन दवाओं का निर्यात निजी कंपनियों को नहीं करेगा बल्कि इसकी आपूर्ति सीधे विदेशी सरकारों को की जाएगी। विदेश मंत्रालय सूत्रों के मुताबिक पिछले 10 दिनों में कई देशों की तरफ से इसकी मांग आई है और शुरुआती तौर पर ऐसा लग रहा है कि कई देश आपातकालीन स्थिति के लिए जरूरत से ज्यादा इसकी मांग कर रहे हैं। हर देश की मांग की समीक्षा करने के बाद अपने स्टॉक के मुताबिक उनके बीच इन दवाओं का विभाजन होगा। अमेरिका, स्पेन जैसे देशों ने पहले ही भारतीय कंपनियों को इसके ऑर्डर दे रखे हैं इसलिए उन्हें पहले आपूर्ति की जाएगी। एक तरह से 'फर्स्ट कम, फर्स्ट गेट' (पहले आइए, पहले पाइए) का नियम लागू किया जाएगा। इस बारे में विदेश मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय और वाणिज्य मंत्रालय के बीच गहन विमर्श से फैसला होगा। पहले चरण में उक्त 13 देशों को तकरीबन 1.5 करोड़ एचसीक्यू की टैबलेट्स दी जाएंगी। विदेश मंत्रालय से अनुमोदन पर ही निर्यात का फैसला होगा। वैसे भारत अगर दूसरे देशों को दवा की आपूर्ति कर रहा है तो वह दूसरी चिकित्सा सामग्री का आयात भी कर रहा है।

### छत्तीसगढ़ में तीन गुना बढ़ी इस दवा की मांग

**नईदुनिया, रायपुर :** कोरोना के फैलने के बाद विश्वभर में हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन की मांग बढ़ी है। छत्तीसगढ़ में भी इसकी मांग तीन गुना हो गई है। कुछ जिलों के सरकारी अस्पताल भी अब इस दवा की मांग कर रहे हैं। हालांकि, कुछ जिला अस्पतालों में विकल्प के रूप में मौजूद अन्य सॉल्ट का इस्तेमाल किया जा रहा है।

थोक दवा व्यापारियों के अनुसार हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन की मांग इन दिनों तीन गुना तक बढ़ गई है। इसकी प्रमुख वजह यह भी बताई जा रही है कि इसकी सप्लाई सरकारी अस्पतालों में की जा रही है।

### अभी दवा की कमी नहीं

छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विस कारपोरेशन के संचालक भुवनेश यादव के अनुसार अभी 3.40 लाख दवाएं स्टॉक में हैं, जो छत्तीसगढ़ की जरूरत के हिसाब से पर्याप्त हैं। अस्पतालों में मांग के हिसाब से आपूर्ति की जा रही है। अभी कहीं कोई कमी नहीं है।

## अमेरिका में पहले रेड अलर्ट खत्म कर चुकी है हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन

**प्रशांत कुमार, कन्नौज**

**22** साल पूर्व न्यूजर्सी के एक अस्पताल को भेजी गई थी मलेरिया की दवा

▶ जिला निवासी डॉ. कमलेंद्र ने मलेरिया पीड़ित बेटी के लिए था मंगवाया

कोरोना के इलाज के लिए इस समय हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन दवा खूब चर्चा में है। आज से 22 साल पहले भी इस दवा ने अमेरिका के एक अस्पताल का रेड अलर्ट खत्म किया था। तब यह दवा कन्नौज से अमेरिकी राज्य न्यूजर्सी के एक अस्पताल में भर्ती भारतवंशी लड़की के लिए गई थी।

कन्नौज के गांव अंदौआ निवासी डा. कमलेंद्र सिंह यादव बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से फिजिक्स में पीएचडी के बाद क्वांटम माल्यूकुलस की स्टडी और इंटर्नशिप के लिए न्यूजर्सी मेडिकल कालेज गए थे। वहां, उन्होंने डीएनए और बायो केमिस्ट्री में शोध किया, जिस पर लिखी किताबें न्यूजर्सी में पसंद की गईं। उन्हें वहीं नौकरी मिल गई तो 1998 में वह अपने परिवार को भी अमेरिका लेकर चले गए।

इस दौरान उनकी बड़ी बेटी को हल्का बुखार था, जिसे न्यूजर्सी के एक अस्पताल में भर्ती कर जांच कराई तो मलेरिया निकला। चूंकि अमेरिका में मलेरिया के केस नहीं होते थे, इसलिए वहां इसकी दवा भी नहीं मिलती थी।

इस पर डॉ. कमलेंद्र ने अपने शिक्षक पिता मिश्रीलाल यादव को फोन कर हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन की गोलियां मंगवाईं। कमलेंद्र के मित्र प्रवीन त्रिपाठी उक्त दवा को कन्नौज से दिल्ली ले गए और वहां से पार्सल कर अमेरिका भेजा। इस दवा के इस्तेमाल के बाद उनकी बेटी ठीक हो गई। इस बात से इसके प्रभाव का पता लगाया जा सकता है।

### मलेरिया का केस देख अस्पताल में था रेड अलर्ट

डॉ. कमलेंद्र वर्तमान में कोलंबिया स्थित मिसौरी विवि में प्रोफेसर एंड असिस्टेंट डायरेक्टर के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने बताया कि जांच में जब बेटी को मलेरिया से पीड़ित पाया गया तो अस्पताल में रेड अलर्ट घोषित हो गया था। जहां, बेटी भर्ती थी वहां, लोग सतर्कता के साथ जाते थे।

## टीबी की जांच करने वाली मशीन का उपयोग कोविड-19 के लिए होगा

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** कोरोना वायरस के संक्रमण की जांच की क्षमता बढ़ाने की कोशिशों के तहत भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) ने 'दवा-प्रतिरोधी (डी-आर) टीबी' की जांच के लिए इस्तेमाल की जाने वाली नैदानिक मशीन का इस्तेमाल करने की इजाजत दी है।

देश की शीर्ष स्वास्थ्य अनुसंधान इकाई आइसीएमआर ने शुक्रवार को कहा कि 'ट्रूलैबटीएम वर्कस्टेशन पर ट्रूनैलटीएम बीटा सीओवी जांच' को मान्यता दी है और उसने इसकी स्क्रीनिंग टेस्ट के तौर पर सिफारिश की है। इस सिलसिले में एक दिशा-निर्देश जारी करते हुए आइसीएमआर ने कहा कि गले या नाक का स्वाब किट के साथ उपलब्ध वायरस लायसिस बफर से 'वायरल ट्रांसपोर्ट मीडियम' (वीटीएम) में एकत्र किया जाएगा।

इसमें कहा गया है, 'पहले के अध्ययनों में यह प्रदर्शित हुआ है कि वायरस लाइसिस बफर ने निपाह और एच1एन1 वायरस को नियंत्रित किया है। वायरस लाइसिस बफर के जरिये सार्स-सीओवी-2 को निर्यंत्रित करने के बाद वायरस आरएनए की स्थिरता के नतीजों का आइसीएमआर-एनआइवी, पुणे से इंतजार है।'

दिशा-निर्देश में कहा गया है, 'तब तक ट्रूनैट बीटा जांच सभी जैव सुरक्षा एहतियातों के साथ ही प्रयोगशालाओं में बीएसएल 2 और बीएसएल 3 इकाइयों में की जानी चाहिए।'

## बंगाल के किसानों को कुनैन की मांग बढ़ने की उम्मीद, इलाज में है प्रभावी

▶ मलेरिया के मरीजों के इलाज में होता है उपयोग, सिनकोना पेड़ों की छाल से की जाती है तैयार

▶ दार्जिलिंग में की जाती है सिनकोना की बागवानी

**प्रेट्र, कोलकाता :** अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा कोरोना वायरस संक्रमण के इलाज में हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन के इस्तेमाल पर जोर दिए जाने के बाद दार्जिलिंग की पहाड़ियों में सिनकोना पेड़ों की बागवानी करने वाले किसानों को कुनैन की मांग बढ़ने की भी उम्मीद जगी है। दरअसल, मलेरिया के प्रभावी इलाज में हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन के अलावा कुनैन की गोलियों का उपयोग भी किया जाता है, जो सिनकोना पेड़ों की छाल से तैयार होती हैं। दार्जिलिंग की पहाड़ियों में 1862 में सिनकोना की बागवानी शुरू हुई और दशकों तक फूलती-फलती रही, क्योंकि देश में मलेरिया के मरीजों की संख्या में कुछ खास कमी नहीं आई। अब इस दवा की मांग भारत सहित दुनिया के कई देशों में है। विश्व मलेरिया रिपोर्ट के अनुसार, 2016 में भारत की आधी आबादी को मलेरिया होने का खतरा था।

हाल के कुछ वर्षों में सिनकोना की बागवानी करने वाले किसानों को कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ा, क्योंकि कुनैन की गोलियों का सिंथेटिक तरीके से उत्पादन होने लगा। बंगाल में सिनकोना बागवानी के निदेशक सैम्यूएल राय ने कहा कि कोरोना वायरस महामारी के मद्देनजर मलेरिया की दवाओं की मांग बढ़ी है और इससे दार्जिलिंग में सिनकोना की बागवानी करने वालों को उम्मीद जगी है। हमें आशा है कि व्यापार में सुधार आएगा। दवा बनाने वाली कंपनियां अब भी सिनकोना पेड़ों की छाल ई-नीलामी के जरिये खरीदतीं हैं, क्योंकि इसका उपयोग अन्य कई दवाओं के निर्माण में भी होता है, लेकिन अब पहले जैसी बात नहीं रही।

**पेड़ों की छाल से होती है तैयार :** हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन की बढ़ती मांग की पृष्ठभूमि में राय ने कहा कि हाईड्रोक्सीक्लोरोक्विन एक सिंथेटिक अणु है, जो क्लोरोक्विन से बनता है और यह रसायनिक तरीके से तैयार कुनैन है। उन्होंने बताया कि कुनैन की गोलियां सिनकोना पेड़ों की छाल से तैयार प्राकृतिक तत्व हैं।

**मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश ने मांगी जानकारी :** यह पूछने पर कि उन्हें ऐसा क्यों लग रहा है कि व्यापार बेहतर होगा, राय ने कहा कि मलेरिया की दवाओं की बढ़ती मांग को देखकर ऐसा लगता है कि सिनकोना पेड़ों की छाल से कुनैन का प्राकृतिक उत्पादन बढ़ेगा। मलेरिया की दवाओं की मांग बढ़ने के बाद मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश ने हमसे सिनकोना पेड़ों की सूखी छाल के बारे में सूचना मांगी है। हमें आशा है कि प्राकृतिक कुनैन लाभकारी होगा। राय ने बताया कि सिनकोना की बागवानी बंगाल के दार्जिलिंग और कलिम्पोंग में होती है।

**महिलाओं ने संभाली गांव की जिम्मेदारी...**

देशभर में जारी लॉकडाउन के बीच जम्मू-कश्मीर में महिलाओं ने गांवों में बाहरी लोगों का प्रवेश रोकने का जिम्मा संभाल लिया है। जम्मू के छाठा गांव में महिलाओं ने शुक्रवार को बाहरी लोगों को लाठी लेकर रोका। प्रेट्र

## घर-घर कोरोना जांच कराने की मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिका

**लगाई अर्जी**

कई लोगों में नजर नहीं आते बीमारी के लक्षण, ऐसे लोग हो सकते हैं कोरोना के वाहक, ऐसे में बड़े स्तर पर जरूरी है जांच

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली**

▶ हॉटस्पॉट शहरों और जगहों से हो इसकी शुरुआत

▶ भारत में कोरोना संक्रमण की जांच दर दुनिया में सबसे कम

▶ समय रहते जांच कर कम किया जा सकता है जोखिम

सुप्रीम कोर्ट। फाइल

सुप्रीम कोर्ट में दाखिल एक जनहित याचिका में कोरोना महामारी के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए घर-घर जाकर जांच कराने की मांग की गई है ताकि संक्रमण पर काबू पाया जा सके। इसकी शुरुआत उन शहरों और जगहों से होनी चाहिए जहां संक्रमण के हॉटस्पॉट हैं। इसके अलावा मांग है कि कोरोना से जंग के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष, पीएम केयर्स फंड और मुख्यमंत्री राहत कोष में एकत्रित किया गया धन कोरोना से निपटने, सुरक्षा किट खरीदने और क्वारंटाइन सेंटर स्थापित करने आदि में खर्च किया जाए।

याचिका में कहा गया है कि भारत में कोरोना संक्रमण की जांच दर दुनिया में सबसे कम है। पिछले कुछ दिनों में जितनी तेजी से संक्रमित लोगों की संख्या में इजाफा हुआ है वह चिंता की बात है। संक्रमण रोकने के लिए इसकी चेन तोड़ना जरूरी है। भारत का बुनियादी प्रयास इस संक्रमण को कम्यूनिटी संक्रमण बनने से रोकना है न कि बड़े पैमाने पर टेस्ट कर संक्रमण की पहचान कर उसे रोकना है जिसके लिए दूसरी तरह के प्रयासों की जरूरत है।

कहा गया है कि हो सकता है कि किसी व्यक्ति में कोरोना के लक्षण हों और वह कोरोना संक्रमित हों, लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि किसी में लक्षण तो कोरोना जैसे दिखें, लेकिन वह कोरोना संक्रमित न हो। इसके अलावा ऐसे लोग भी हो सकते हैं जिनमें कोरोना का संक्रमण हो, लेकिन उनमें इसके लक्षण न दिखाई दे रहे हों, ऐसे लोग कोरोना के वाहक हैं। इस सबकी पहचान बड़े पैमाने पर घर-घर जांच से ही हो सकती है।

यह जनहित याचिका इलाहाबाद के चार वकीलों शाश्वत आनंद, अंकुर आजाद, फैज अहमद और सागर की ओर से दाखिल की गई है। याचिका में केंद्र सरकार व डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी को पक्षकार बनाया गया है।

### खाड़ी में फंसे प्रवासी कामगारों की मदद के लिए याचिका दायर

**नई दिल्ली, (प्रेट्र) :** सुप्रीम कोर्ट में दायर की गई एक याचिका में खाड़ी देशों में फंसे भारतीय कामगारों को बचाने और उन्हें वापस लाने के लिए केंद्र को निर्देश देने की मांग की गई है। कोरोना महामारी के कारण प्रवासी कामगार फंसे हुए हैं। प्रवासी लीगल सेल ने याचिका में कहा है कि इन प्रवासियों के लिए उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। ये प्रवासी श्रमिक वहां नाजुक स्थितियों में रह रहे हैं।

### हर तीन-चार दिनों में शीर्ष कोर्ट के कामकाज की समीक्षा करेंगे सीजेआइ

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** प्रधान न्यायाधीश (सीजेआइ) एसए बोबडे अन्य न्यायाधीशों और स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों से संपर्क कर हर तीन चार दिनों में सुप्रीम कोर्ट के कामकाज की समीक्षा करेंगे। यह जानकारी सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के सचिव अशोक अरोरा ने दी। उन्होंने कहा कि बार के नेताओं एवं अन्य निकायों की ओर से सुझाव दिया गया है कि इस वर्ष ग्रीष्मावकाश की कुछ समय तक प्रतीक्षा की जानी चाहिए और तब तक कामकाज के संबंध में यथास्थिति बनाए रखा जाना चाहिए।

## बंगाल केमिकल बनाएगी हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन

**राज्य ब्यूरो, कोलकाता :** कोरोना वायरस के इलाज में इस्तेमाल होने वाली मलेरिया की दवा हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन कोलकाता स्थित बंगाल केमिकल में भी बनाई जाएगी। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के आदेश के बाद यह निर्णय लिया गया है।

बंगाल केमिकल की ओर से शुक्रवार को दी गई जानकारी में बताया गया है कि कंपनी प्रति महीने डेढ़ करोड़ टेबलेट बना सकती है। अब तक बंगाल केमिकल में क्लोरोक्विन फास्फेट-250 बनाई जाती थी। हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन और क्लोरोक्विन फास्फेट की रासायनिक संरचना एक ही है, केवल हाइड्रोक्सी अतिरिक्त तौर पर लगाया जाता है। अब यहां कोरोना की दवा भी बनेगी। आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रॉय द्वारा निर्मित यह कंपनी लंबे समय से दवा के कारोबार में जुटी रही है। कहा जा रहा है कि कच्चा माल (रॉ मैटेरियल) लाने में कुछ समस्याएं हो रही हैं।